بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 20 मार्च 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(अमान महीने की तिथि 20,1405 हश)

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पुर-मआरिफ़ (ज्ञानवर्धक) फ़रमानों की रोशनी में दुनिया और आख़िरत की भलाई माँगने की नसीहत।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-20.03.2026

محلہ احمدیہ قادیان پنجاب.143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूर: अल-फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुजूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिनसृहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

आज ईद का ख़ुत्बा भी मैंने दिया है, इसलिए इस समय मैं छोटा (संक्षिप्त) ख़ुत्बा दूँगा। इसके लिए मैंने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक इक़तिबास (उद्धरण, किसी लेख की कुछ विशेष पंक्तियाँ) लिया है, जिसकी तरफ़ हमें हमेशा ध्यान देना चाहिए।

आप फ़रमाते हैं कि मोमिन के दुनिया के साथ जितने ज़्यादा ताल्लुक़ात (संबंध) होते हैं, वह उसके ऊँचे दर्जे (मरतबे) का कारण बनते हैं, क्योंकि उसका मक़सद (नसब-उल-ऐन) दीन होता है।

इस संदर्भ में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि दुनिया के साथ संबंध भी इसलिए अच्छे होते हैं कि उनका मक़सद दीन हो। यही मोमिन की पहचान है। फ़रमाया: और दुनिया, उसका माल और इज़्ज़त (मान सम्मान) दीन की ख़िदमत करने वाली हो। इसलिए असली बात यह है कि

केवल दुनिया ही अपने आप में मक़सद न हो, बल्कि दुनिया को हासिल करने में असली उद्देश्य दीन होना चाहिए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने इस बात पर ज़ोर देते हुए साफ़ तौर पर फ़रमाया कि अगर दुनिया भी कमाओ, तो मक़सद यह होना चाहिए कि हमारा दीन बेहतर हो और हम दीन की ख़िदमत करें। दुनिया कमानी है तो दीन की भलाई के लिए, न कि ग़लत काम करके अपनी दुनिया और आख़िरत बिगाड़ने के लिए, बल्कि अपनी आख़िरत को सँवारने और अपने दीन को बेहतर बनाने के लिए हमें दुनिया कमानी चाहिए।

फ़रमाया कि दुनिया को इस तरह हासिल किया जाए कि वह दीन की ख़िदमत करने वाली बने। जैसे इंसान एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए सफ़र में सवारी और ज़ाद-ए-राह (रास्ते का सामान) साथ लेता है, तो उसका असली मक़सद मंज़िल तक पहुँचना होता है, न कि खुद सवारी या रास्ते की चीज़ें।

इस मिसाल को समझाते हुए हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि ये सारी चीज़ें जो हम सफ़र में साथ लेते हैं, आसानी पैदा करने के लिए होती हैं। इनका मक़सद यही होता है कि सफ़र आराम से कट जाए और हम अपनी मंज़िल तक पहुँच जाएँ, न कि हम रास्ते में ही इन चीज़ों का मज़ा लेने में लग जाएँ।

फ़रमाया: इसी तरह इंसान दुनिया को हासिल करे, लेकिन उसे दीन का ख़ादिम (सेवक) समझकर।

हुज़ूर-ए-अनवर ने बताया कि अल्लाह तआला ने जो यह दुआ सिखाई है: رَبَّنَا اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ, इसका मतलब है: ऐ अल्लाह! हमें दुनिया की भलाई भी दे और आख़िरत की भलाई भी।

आप फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने जो यह दुआ सिखाई है: رَبَّنَا اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً, इसमें भी दुनिया को पहले रखा है, लेकिन कौन-सी दुनिया को?

फ़रमाया: हसनतुद्दुन्या वह दुनिया है, जो आख़िरत में भलाई (हसनात) का कारण बने।

इसी संदर्भ में हुज़ूर-ए-अनवर ने ध्यान दिलाते हुए फ़रमाया कि ऐसी दुनिया हासिल करें, जिससे आख़िरत में भी फ़ायदा हो। ऐसी चीज़ें दुनिया में पाई जाएँ जो आख़िरत की भलाई का कारण बनें, न कि ऐसी कि आख़िरत में हमें शर्मिंदगी का सामना करना पड़े, बिल्कुल। अगर ऐसा न हुआ तो दुनिया में ही पड़ेंगे और आख़िरत में भी शर्मिंदगी झेलनी पड़ेगी।

आप फ़रमाते हैं कि इस दुआ की तालीम से साफ़ तौर पर समझ में आता है कि मोमिन को दुनिया के हासिल करने में हसनातुल-आख़िरत का ध्यान रखना चाहिए। और साथ ही हसनतुद्दुन्या के शब्द में दुनिया हासिल करने के सभी बेहतरीन साधनों का ज़िक्र भी आ गया है, जिन्हें एक मोमिन मुसलमान को अपनाना चाहिए। दुनिया को हर उस तरीके से हासिल करो जिससे केवल भलाई और अच्छाई ही हो, न कि ऐसा तरीका जिससे किसी और इंसान को तकलीफ़ पहुँचे या अपने संगी साथियों में किसी तरह की शरमिंदगी या अपमान पैदा हो। ऐसी दुनिया निश्चित रूप से हसनातुल-आख़िरत का कारण बनेगी।

हुज़ूर-ए-अनवर ने इसी संदर्भ में ध्यान दिलाते हुए फ़रमाया कि ऐसी दुनिया कमाओ, जिससे न केवल तुम्हें फ़ायदा हो, बल्कि इंसानियत को भी फ़ायदा पहुँचे। दुनिया में ऐसी हरकतें न हों जो तुम्हारे लिए शर्म का कारण बनें, न तुम्हारे परिवार

और नज़दीकी लोगों के लिए। बल्कि तुम्हारी ज़िंदगी साफ़-सुथरी हो, नेक़ी और तक़वा पर चलने वाली हो। और जब ऐसी ज़िंदगी होगी और तुम ऐसी दुनिया कमाने के लिए अपनी ज़िंदगी सर्फ़ (बिताओगे, समर्पित करोगे) करोगे, तो वह तुम्हें दुनिया और आख़िरत दोनों में खुशियाँ देगी।

ख़ुत्बा-ए-जुमअ: के अंत में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि आज जब दुनिया आम तौर पर अपने मक़सदों और फ़ायदों के लिए लगी हुई है, व्यक्तिगत फ़ायदों को तरजीह दी जा रही है, अगर हम क़ौमों को देखें तो उन्हें केवल अपनी क़ौम की फ़िक्र है, इंसानियत की नहीं। और इस में पड़कर ये लोग अपनी तबाही के साधन तैयार कर रहे हैं। हमें ऐसे हालात में अल्लाह तआला से दुनिया और आख़िरत की भलाई माँगने की तरफ ध्यान देना चाहिए। हमें ऐसे हालात में इस तरफ़ बहुत ज़्यादा ध्यान देने की जरूरत है, ताकि हम अपनी दुनिया और आख़िरत को सँवार सकें और हर तरह की आफ़ात से सुरक्षित रह सकें। दुनिया तबाही के गड्ढे में जा रही है, जैसा कि मैंने कहा, अल्लाह तआला हमें इससे सुरक्षित रखे।

अल्लाह तआला करे कि हमें अपने अमल को भी बेहतर करने की तौफ़ीक़ मिले और इस लिहाज़ से दुआएँ करने की भी तौफ़ीक़ मिले। जैसा कि अभी (ईद के) ख़ुत्बा में भी मैंने कहा था कि अल्लाह तआला हमें हक़ीक़त में इन हसनात को हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फरमाएँ, और सबसे बेहतरीन दुआएँ करने की तौफ़ीक़ अता फरमाएँ, और उन्हें भी कबूल फरमाएँ।

आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131